पर्यावरण अध्ययन

(Environmental Studies)

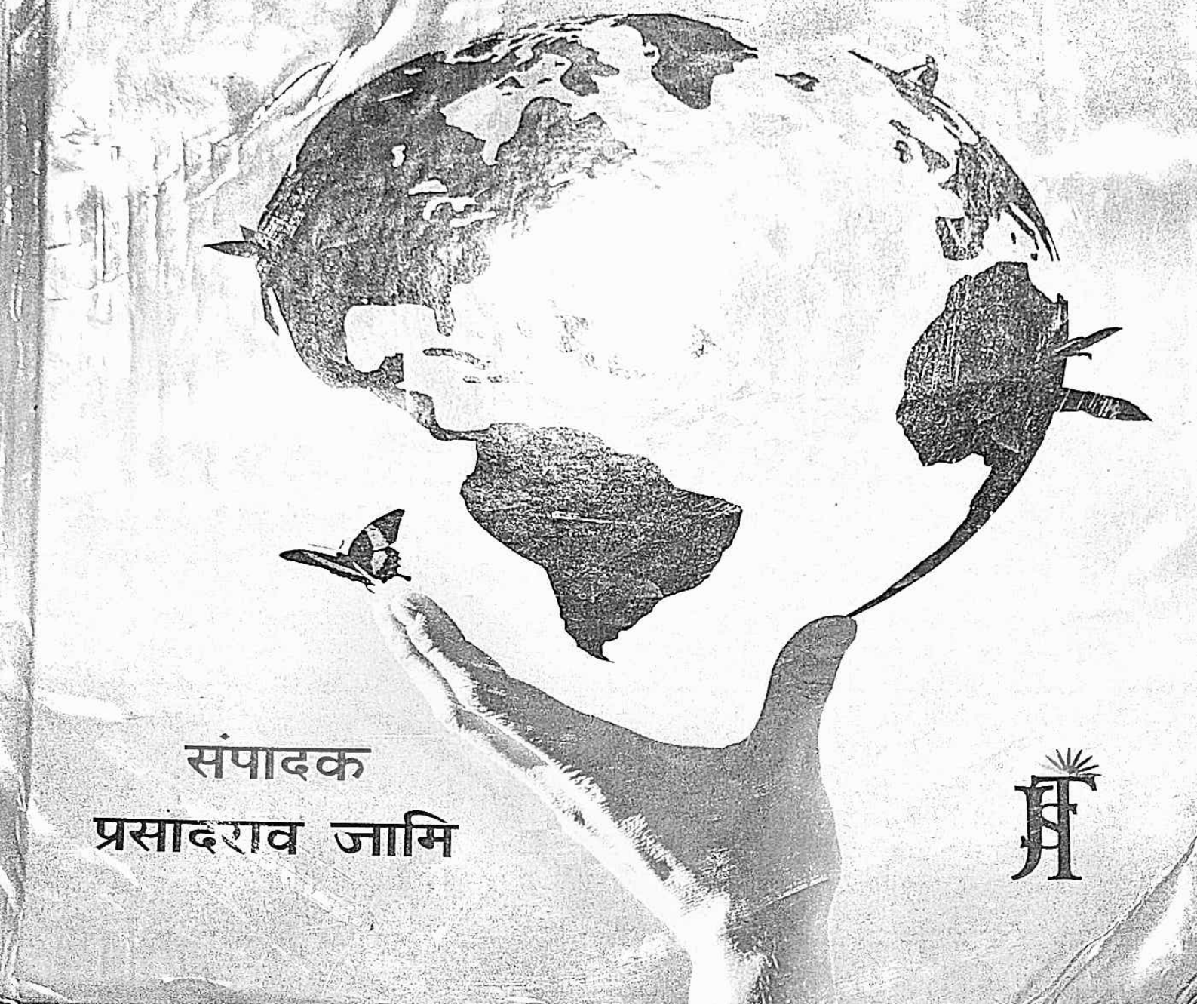

संपादक

प्रसादराव जामि

पर्यावरण अध्ययन

(Environmental Studies)

संपादक

प्रसादराव जामि

JTS Publications

Delhi-110053

Published by:
Rajiv Kumar Sharma
JTS Publications
V-508, Gali No. 17, Vijay Park Delhi-110053
Mob.08527460252, 9990236819
Email: jtspublications@gmail.com

पर्यावरण अध्ययन

संपादक
प्रसादराव जामि

© Publisher

First Edition, 2024
ISBN 978-81-971200-0-8
Price : 1500/-

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

Cover Design : Rajiv Sharma
Laser typeset by : Santoshi Computers, Delhi-53

PRINTED IN INDIA
Published and Printed by JTS Publications, Delhi-110053

भूमिका

भारत के ऋषि मुनियों द्वारा विरचित वेदों, पुराणों, उपनिषदों तथा अनेक धार्मिक ग्रंथों में पर्यावरण का विवरण हमें प्राप्त होता है।भारत में आदिकाल से ही जीव जंतु एवं वनस्पतियों का गहरा संबंध है।जब से सृष्टि की रचना हुई है तभी से मानव ने अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति प्राकृतिक संसाधनों से करता आ रहा है। जैसे-जैसे मानव का विकास करता गया उसके प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता बढ़ती गई। इसी की वजह से फलस्वरूप वर्तमान हमारे समक्ष प्रत्यक्ष खड़ी हो गई। पर्यावरण के प्रदूषित होने से धरातल का संतुलन बिगड़ जाता है और विभिन्न प्रकार के परिवर्तन दृष्टिगोचर होती है। आधुनिक मानव अपने सुख समृद्धि एवं स्वार्थ के लिए पर्यावरण को मुख्य रूप से पृथ्वी, जल, वायु, ध्वनि और अंतरिक्ष प्रदूषण कर दिया है। आज संपूर्ण विश्व पर्यावरण के प्रति चिन्तनशील है। पर्यावरण प्रदूषण विश्व की एक सार्वभौमिक समस्या बनी हुई है।पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव और कारण पृथ्वी के दूषित भौतिक और जैविक पहलू को उजागर करते हैं, जो आदर्श पर्यावरणीय प्रणालियों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।निर्वनीकरण से लेकर कृषि तक,मानवीय गतिविधियाँ पर्यावरण को प्रदूषित कर रही हैं।
पर्यावरण एक प्राकृतिक परिवेश है।पृथ्वी पर जैव विविधता का भंडार है। औद्योगिकरण भविष्य में मनुष्य के अस्तित्व कहीं अभिशाप न बन जाए।

संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण संतुलन के लिए यूएनईपी का मिशन भविष्य की पीढ़ियों से समझौता किए बिना अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए राष्ट्रों और लोगों को प्रेरित,सूचित और सक्षम करके पर्यावरण की देखभाल में नेतृत्व प्रदान करना और साझेदारी को प्रोत्साहित कर रही है।भारत सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय राष्ट्रीय नदी संरक्षण कार्यक्रम,प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण की उप-योजनाएं,राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम और हरित भारत मिशन,राष्ट्रीय तटीय प्रबंधन कार्यक्रम,जलवायु परिवर्तन के तहत हिमालयी अध्ययन पर राष्ट्रीय मिशन लागू कर रहा है।
पर्यावरण संतुलन के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ सारे विश्व देशों में वृक्षारोपण की जागरूकता ला रही है।

इस 'पर्यावरण अध्ययन' पुस्तक के माध्यम से भारत के विभिन्न विद्वानों, शिक्षाविदों, अनुसंधानकर्ताओं, शोधार्थियों, विद्यार्थियों, साहित्यकारों, समाजसेवियों ने अपने मौलिक सार गर्भित, अपने निजी अनुभवों एवं अपनी मूल्यवान विचारों से पर्यावरण के प्रति अपना कर्तव्य निभाई है।इस पुस्तक में अति संवेदनशील और महत्वपूर्ण पर्यावरण समस्या और विभिन्न मुद्दे एवं चुनौतियां को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। मैं उन सभी महानुभावों को प्रेम पूर्वक एवं आदर पूर्वक धन्यवाद करता हूं।हमें आशा है कि 'पर्यावरण अध्ययन' पुस्तक पर्यावरण संतुलन के प्रति जागरूकता लाएगी एवं शैक्षिक, साहित्यिक, सामाजिक विभिन्न विषयों पर शोध करने वाले शोधार्थियों, महान मनीषियों तथा शिक्षाविदों और पाठकों हेतु ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध होगी। जय हिंद। जय भारत।

सम्पादक
प्रसादराव जामि
भारत

अनुक्रमाणिका

क्र.	लेख का नाम /लेखक	पेज
1.	**पर्यावरण प्रदूषण: वैश्विक चिंतन** प्रसादराव जामि	11
2.	**रामचरितमानस में पर्यावरण संदेश** प्रो. डॉ. शेख शहेनाज	17
3.	**पर्यावरण संरक्षण** श्रीमती अरूणा अग्रवाल	21
4.	**पर्यावरण अध्ययन** वी एन वी पद्मावती	22
5.	**भारतीय सांस्कृतिक परम्पराएँ रीति रिवाज और पर्यावरण संरक्षण** डॉ. अनुराधा पालीवाल	25
6.	**मानवीय पर्यावरण-संरक्षण और नियन्त्रण** सुरेश लाल श्रीवास्तव	29
7.	**पर्यावरण का संरक्षण** डॉ . यम . राज्यलक्ष्मी	34
8.	**भारतीय लोक जीवन में पर्यावरणीय चिन्तन** अजय कुमार, विनोद कुमार	36
9.	**पर्यावरण संबंधी समस्याएं** श्रीमती कमलेश कुमारी	41
10.	**पर्यावरण संरक्षण** मीनाक्षी सैनी	42
11.	**पर्यावरण और मानव जीवन** सावित्री जामि	45
12.	**पर्यावरण शिक्षा** डॉ. शेफालीबेन पटेल	47
13.	**पर्यावरण स्थानीय शहरी निकायों में अनु० जातियों का प्रतिनिधित्व पटना नगर निगम (बिहार) में अध्ययन** डॉ. मुरारी शंकर	52
14.	**पर्यावरण नियम** डॉ. अमिता अरजरिया	56
15.	**पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता** डॉ सीताराम आठिया	69
16.	**पर्यावरण चिंतन** प्रवीण कुमार जामि	75

2
रामचरितमानस में पर्यावरण संदेश

प्रो. डॉ. शेख शहेनाज
हिंदी विभाग प्रमुख
हु. जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर, नांदेड -431802

प्रकृति और मनुष्य परस्पर सहचरणी है। दोनों का अटूट संबंध है। मनुष्य ने जब आँखे खोली स्वंय को प्रकृति की गोद में पाया। धर्म दर्शन साहित्य कला सभी क्षेत्रों में प्रकृति का महत्वपूर्ण अग्रगण्य स्थानहै। साहित्य की निर्मिती भी प्रकृति की गोद से ही हुई है। साहित्यकार प्रकृति के आँगन में बैठकर ही अपनी कृति को सजीव रूप देता है। प्रकृति या पर्यावरण काव्य को सजीवता प्रदान करते है।

रामचरितमानस में पर्यावरणीय सम्पन्नता के कीतपय संकेतों का अवलोकन करें तो तमुलसीदास जी का वृक्षारोपण को एक स्वाभाविक कार्य मानकर मानस में वर्णित कर प्रकृति में उपलब्ध औषधीय तत्वों को भी बताकर जैविक विविधता के साथ मानस में वयैयक्तिक वृत्ति और पर्यावरण का समन्वय आदि बिंदूओं को उजागर किया है।

पर्यावरण अध्ययन, पर्यावरण संरक्षण हिंदू संस्कृति के अभिन्न अंग रहे है। वाल्मीकि रचित रामायण से लेकर तुलसीदास रचित रामचरितमानस में प्रकृति चित्रण पर्यावरण संचेतना, पर्यावरण संरक्षण का विस्तृत उल्लेख किया गया है। पृथ्वी को धरती माता के रूप में पूजित माना गया तथा सूर्य, जल, वायु, वृक्ष, अग्नि सभी देवता मानकर पूजनीय माना गया। केवल यहीं नहीं विभन्न देवी-देवताओं के वाहक के रूप में विभिन्न पशु-पक्षियों की भी आराधना की पद्धति विकसित की गयी। जलवायु को दुषित करना, वृक्षों को अनावश्यक रूप से काटना पाप माना जाता था, क्योंकि उस समय ऋषि-मुनियों को पर्यावरण के इन महत्वपूर्ण घटकों का ज्ञान था। तत्कालीन भारतीय सामाजिक जीवन पर्यावरणीय तत्वों से जुड़ा हुआ था।

आज भारतीय पर्यावरण में संकट मंडरा रहा है। भौतिकवाद की अवधारणा ने हमें पर्यावरण प्रदुषण के रूप में अपना अस्तित्व नष्ट करने पर तुल हुए है। पर्यावरण प्रदुषण ने मानव जाति के अस्तित्व को ही चुनौती दे दी है। वायुप्रदुषण, जलप्रदुषण, ओज़ोन पर में छेद, अम्लीय वर्षा आदि का अत्यंत विनाशकारी स्वरूप वैज्ञानिकों के चिंता का कारण बन गया है। लंबे समय से भौतिक विकास का सुख भोग रहे मानवी की सुप्त पर्यावरण चेतना अब जागृत हो रही है। अब वह पर्यावरण संरक्षण की बात करने लगा है। समस्याओं से ग्रस्त मानव का निदान करने के लिए समाज और शासकीय प्रयासों की तुलना में उस समाज के सांस्कृतिक मूल्य अधिक प्रभावी होते है। इस संदर्भ में भारतीय संस्कृति के आधार पुरातन ग्रंथ, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत के साथ तुलसीदास रचित रामचरितमानस का अध्ययन करें तो हमें पर्यावरण का महत्व, उसका संरक्षण समझ में आएगा। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में जगह-जगह पर्यावरण संबंधी संदेश दिया है, जो उल्लेखनीय है।

रामचरितमानस में पर्यावरण के संदर्भ में कहा गया है कि, उस समय पर्यावरण प्रदुषण की समस्या नहीं थी। पृथ्वी का अधिकांश भाग पर जंगल था। उस समय शिक्षा का केंद्र भी आबादी से दूर वनों में ऋषि-मुनियों के आश्रम में था। रामायण में राम सहित अन्य भाईयों ने भी महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में शिक्षा ग्रहण की थी। उस समय समाज ऋषि-मुनियों का बड़ा सम्मान करता था। बड़े से बड़े प्रतापि राजा भी मुनियों के सामने अपना सर झुकाते थे। यहीं कारण है कि जब श्रीराम को बनवास होता है तो उन्हें सर्वाधिक आनंद इस बात से होता है कि उनको वन-क्षेत्र में ऋषि-मुनियों का साथ मिलेगा।

"मुनिगन मिलन विशेष वन
सबहि भांति हित मोर।"1

रामचरितमानस में हम पाते है कि विभिन्न प्राकृतिक अवयव उपभोग की वस्तु मात्र न होकर उससे सभी जीवों तथा वनस्पतियों से प्रेम संबंध स्थापित करने को कहा है। उसका आवश्यकता नुसार कृतज्ञतापूर्वक उपभोग प्रतिपादि की गया है। जैसे कि वृक्ष से फल तोड़कर खाना तो उचित है पर वृक्ष को काटना अपराध है।

"रीझि-खीझी गुरूदेव सिष सखा सुसाहित साधु।
तोरि खाहु फल होई भतु तरु काटे अपराधू।"2

प्रकृति और सुखी समाज व्यवस्था हजारों वर्षो से जनसामान्य को प्रभावित और अकर्षित करती रहती है। इसलिए रामराज्य हमारा सांस्कृतिक लक्ष्य रहा है। रामचरितमानस में भारतीय समाज के गौरवशाली अतीत की मधुर स्मृतियाँ संजोयी गयी है। देश की श्रेष्ठ पर्यावरणीय विरासत के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना भी मानसकार का लक्ष्य रहा है। मानकार ने यह बताने का प्रयास किया है कि रामायणकालीन भारत में समाज में पेड़-पौधों, नदी-नालों व जलाशयों के प्रति लोगों में जैवसत्ता का भाव था। यही कारण है कि प्रकृति के अवयवों जैसे नदी, पर्वतों, पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं सभी का व्यापक वर्णन मानस में सर्वत्र मिलता है। नदी पर्यावरण का प्रमुख घटक है। दुनिया की सभी प्राचीन सभ्यताओ का विकास प्राय: नदियों के तट पर हुआ था। हमारे देश में काशी, मथुरा, उज्जैन और आयोध्या जैसे अध्यात्मिक नगर नदियों के तटों पर स्थित है। गंगा हमारे देश की प्राचीनकाल से पुज्य रही है, तुलसीदास जी लिखते है – गंगा का पवित्र जल पथ की थकान को दूर कर पथिक को सुख प्रदान करने वाला है। -

"गंगा सकल मुद मूला
सब सुख करिनहरनि सब सूला।"3

इसीलिए जब श्रीरामचंद्रजी स्वंय गंगा को प्रणाम करते है और अन्य ग्रामवासियों से भी वैसा ही कराते है।

"उतरे राम देवसरि देखी।
कीन्ह दंडवत हरषु विसेषी।।
लखन सचिव सिय किए प्रनामा।
सबहि सहित सुखु पायड रामा।।"4

इतना ही नहीं तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में वर्णित किया है कि श्रीरामचंद्रजी विवाहोपरान्त बारात लौटकरी आयोध्या आते है तो आयोध्या नगरी में विविध पौधों का रोपण किया जाता है। -

"सफल-पूगफल कदलि रसाला।
रोपे बकुल कदम्ब तमाला।।"5

इस पौधा रोपण की संस्कृति को विकसित करने के लिए श्रीरामजी ने अपने वन-प्रवास के दिनों में सीताजी व लक्ष्मणजी से भी पौधा-रोपण कर पर्यावरण संदेश दिया है। -

"तुलसी तरुवर विविध सुहाय।
कहुँ-कहुँ सिएँ, कहुं लखन लगाये।।"6

आज के सबसे भयावह संकट पर्यावरण प्रदुषण से मुक्ति संभव है। जब कोई भी शुभ अवसर हो पौधा-रोपण की संस्कृति का पालन करना आज अनिवार्य हो गया है।

प्रकृति में उपलब्ध औषधिय गुणों से भरपूर वनस्पति का ज्ञान मानवजाति के स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है और इस ज्ञान का सर्वोत्तम स्त्रोत रामायण तथा रामचरितमानस माने जा सकते है। तुलसीजी ने विस्तृत रूप से इन औषधिय गुणों से भरपूर प्राकृतिक जड़ी-बुटियों का उल्लेख किया है। रामचरितमानस में प्रकृति में उपलब्ध औषधिय तत्वों का प्रतीकात्मक रूप से बहुत ही सुंदर वर्णन मिलता है। युद्ध के समय लक्ष्मणजी मुर्छित होने पर लंका से वैद्य सुसैन को बुलाया जाता है और संजीवनी बुटी द्वारा उनका उपचार किया जाता है, जिसका उल्लेख तुलसीजी ने इस प्रकार किया है, -

"राम पदारबिद सिर नायक आइ सुशेन।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवन सुत लेन।।
देखा सैल न औषध चीन्हा।
सहसा कपि उपरि गिरी लीन्हा।
गहि गिरि निसि नभधावत भयऊ।
अवधपुरी उपर कपि गयऊ।
हरषि राम भेटेउ हनुमाना।

अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना।।
तुरत बैद तब कीन्ह उपाई।
उठि बैठे लछिमन हरषाई।।"7

प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने से अनेक विकृतियाँ उत्पन्न होती है। प्रकृति के सानिध्य में न रहनेवाले जीव-जंतुओं का अस्तित्व संकटग्रस्त हो जाता है। श्रीरामचंद्र प्रार्थना कर समुद्र को विनय करते है पर समुद्र ध्यान नहीं देता है, तो वे क्रोध में आ जाते है और धनुष-बाण उठाते जिससे समस्त जलचर व्यथित हो उठता है। -

"संधोनेउ प्रभु बिसीव कराला।
उठी उदधि उर अंतर जवाला।।
मकर उरग झष गन अकुलाने।
जरत जंतु जलनिधि जब जाने।।"8

यहाँ तुलसीदासजी हमें यहीं संदेश देते है कि, वास्तव में प्रकृति हमें स्वाभाविक रूप से अपने उपहार देती है। कृतज्ञ भाव से बिना छेड़छाड़ किये उन्हें ग्रहण करना चाहिए। असीमित स्वार्थ से किया गया शोषण विकृति उत्पन्न करता है, जो अंतत: प्रलयकारी होता है। समुद्र के माध्यम से प्रकृति की प्रवृति को अभिव्यक्त किया गया है।

तुलसीदासजी ने जगह-जगह दोहे और चौपाइयों के माध्यम से हमे पर्यावरण एवं प्रकृति के विविध आयामों से परिचित कराया है। रामचरितमानस में हरी-भरी धरती और वन्य-जीवन के प्रति प्रेममूलक संबंधों एंव पर्यावरण संरक्षण में समाज को भागीदार बनाकर एक आदर्श उपस्थित किया है। तुलसी ने मानस में पृथ्वी से लेकर आकाश तक सृष्टि के पांचो तत्वों की विस्तृत चर्चा की है। हमारी मान्यता यह है कि मनुष्य पांच तत्वों से मिलकर बना है। प्रकृति निर्मल और पवित्र रहने पर प्राणीमात्र के लिए फलदायी और सुखदायी होती है।

"छिती जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम सरीरा।।"9

तुलसीदासजी ने वैयक्तिक वृत्ति और पर्यावरण के समन्वय को भली भाँति समझकर व्यक्ति द्वारा तामसिक भाव से किए जाने वाले सात्विक कार्यों के परिणाम की अनुचितता की ओर भी संकेत किया है। -

"तामस धर्म करहिं नर जप-तप व्रत मखदाना।
देव न बरषहिं धरनी बए न जामहिं धाना।"10

इस काल में सब ओर सुख-शांती थी। पर्यावरण भी संतुलित था, धन-धान्य की कहीं कमी नहीं थी। सारे मौसम सर्दी-गर्मी-बरसात अपनी संतुलित गति से चलते थे। ना बाढ का संकट था, ना कहीं सुखा पड़ता था। प्रकृति के साथ समाज की समन्वयकारी सहयोग बना हुआ था। जिसे तुलसी लिखते है -

"दैहिक दैहिक भौतिक तापा।
राम राज नहीं कहुहि व्यापा।।"11

इस प्रकार रामायण काल में समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुख, संतोष, शांती और आनंद उपलब्ध था। सर्वत्र मंगलमय वातावरण था। तुलसीदासजी ने मानस में पर्यावरणीय सम्पन्नता की पराकाष्ठा को छुआ है। पर्यावरण संरक्षण के लिए मानवीय सतत प्रयास समर्पण और परिश्रम आवश्यसक है। व्यक्ति और पर्यावरण में जब समन्वय होता है तो प्रकृति का स्वरूप सकारात्मक होता है। जैसे -

"कहेउ राम वियोग तव सीता।
मो कहुँ सकल भए विपरिता।
जहँ-जहँ जाहिं देव रघुराय।
करहिं मेघ तहें तहें नभ छाया।।"12

तुलसीदासजी ने प्रतीकात्मक रूप में श्रीरामचंद्रजी की उपस्थिति किस प्रकार संपन्न बनाती है उसका संकेत हमे अरण्यकांड में दिया है-

"जब ते राम कीन्ह तहँ बासा।
सुखी भए मुनि बीती त्रासा।
गिरि वन नदी ताल छवि छाए।
दिन दिन प्रीति अति होहि सुहाए।"13

तुलसीजी ने स्पष्ट संकेत दिया है कि श्रीरामजी की उपस्थिति से पर्यावरणीय चेतना अध्यात्मिक सम्पन्न होती है। मानवीय संवेदनाओं, प्रवृत्तियों के अनुरूप सामाजिक वातावरण की प्रवृत्तियों, परिवर्तनों के साथ प्राकृतिक पर्यावरण की प्रवृत्तियों के सामन्जय का विस्तृत विश्लेषण कर वर्तमान वैश्विक पर्यावरण के संदर्भ में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा की है। साथ ही संपूर्ण मानवजाति के अस्तित्व को भी बचाया है।

इस प्रकार रामचरितमानस में ऐसे अनेक प्रसंग है, जिसमें कहीं-कहीं प्रतीकात्मक उल्लेख किया गया जो आज वर्तमान में प्रासंगिक है। सही अर्थों में इस प्रसंग और संदर्भों की चर्चा आज बहुत जरूरी हो गयी है। प्रकृति प्रेमी राम को अपना आदर्श माननेवाले समाज की आज क्या स्थिति हो गई है? वन, उपवन ओर उद्यानों को छोड़ दे तो आजकल हम अपने घरों से तुलसी का पौधा भी गायब कर दिया है। बड़े-बड़े घरों के लान एवं गमलों में तुलसी की जगह केक्टस, चीनी पौधे लगाए जा रहे है। घर की भीतरी सजावट के लिए हम प्लास्टिक के फलू पत्तों लगा रहे है। अधिकरत घरों में कांच के गमलों में हरे पौधों की जगह प्लास्टिक का उपयोग हो रहा है। प्लास्टिक के फूल-पौधे बैठक कक्षा की अलमारी या टी.वी. टेबल की शोभा बढ़ा रहे है। हम आज जिने सभ्य और संस्कृत समाज में जी रहे है, उतने ही प्रकृति से दूर भाग रहे है। हम अपने आपको भौतिक साधनों से लिप्त कर लिया है। इतना ही नहीं हम फलों का आहार भी ताज़ा नहीं ले रहे है, और ना ही हम नदी, तालाब, सरोवर का पानी पी रहे है। कंद-मूल तो जैसे हम सिर्फ काव्य में पढ़ते है। उन्हें हम देखना गंवारा भी नहीं करते। हम अपने बच्चों को भी पुस्तक में ही प्रकृति के संसाधनों से परिचित करा रहे है। आज मानव प्रकृति, पर्यावरण को प्रदुषित करने में खूद को श्रेष्ठ समझ रहा है। अभी भी समय है हमने समय पर पर्यावरण के बारे में सज्ञान लिया तो हम पर्यावरण संरक्षण कर पाएँगे। तुलसी ने हर दोहा और चौपाई में इसका संकेत किया है। तुलसी ने यह भी कहा है कि, धरती पर अनायास रामराज्य स्थापित नहीं किया जा सकता है। इसके लिए प्राकृतिक पर्यावरण संरक्षण की और संस्कृति विकसित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :

1. श्रीरामचरित मानस, गीता प्रेस गोरखपुर, संवत 2072
2. आयोध्या कांड – रामचरित मानस – तुलसीदास – चौ. 1
3. रामचरितमानस – गीता प्रेस गोरखपुर
4. आयोध्या कांड – रामचरित मानस – तुलसीदास – चौ. 2
5. रामचरितमानस – गीता प्रेस गोरखपुर
6. रामचरितमानस – बालकांड – चौ. 4
7. वही – आयोध्याकांड – चौ. 4
8. वही – लंका कांड – चौ. 4, 1
9. वही – सुंदरकांड – चौ. 6
10. वही – उत्तरकांड
11. वही – उत्तरकांड – चौ. 1
12. वही – अरण्यकांड – चौ. 1
13. वही – अरण्यकांड – चौ. 1